श्री १००८ श्री मज्जिनेन्द्र त्रिमूर्ति पंचकल्याणक

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव, बरौदिया कलाँ

के पावन पर्व पर प्रकाशित

संगीत प्रसून

(भाग २)

प.पू. आचार्य १०८
श्री विराग सागर जी महाराज

रचयिता- मुनि श्री विशद सागर जी

अभिनंदन

विशद ज्ञान है, विशद सोच है, विशद हृदय है जिनका,
मुनि विशद सागर स्वीकारो अभिनंदन जन जन का ।
मोह जाल को काट आप अब, आगे निकल चुके हैं,
काम क्रोध तृष्णा गर्वादि, मोम से पिघल चुके हैं ।
यह संसार असार आपको, जैसे कोई तिनका,
मुनि विशद सागर स्वीकारो.........।

माता-पिता धन्य वे जिनने, ऐसा लाल दिया है,
लिखकर सत् साहित्य धर्म का, उँच्चा भाल किया है ।
धर्म ध्वजा, उँच्ची रखना ही, लक्ष्य रहा है जिनका,
मुनि विशद सागर स्वीकारो.........।

भ्रमण निरंतर करते रहते, और बांटते ज्ञान,
प्रवचन सुनकर अमल करें जो, हो जाता कल्याण ।
पर उपकारी जीवन जिनका, लोभ नहीं कंचन का,
मुनि विशद सागर स्वीकारो.........।

सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह, के हैं आप पुजारी,
दया प्राणियों पर करते हैं, मुनिवर पिच्छी धारी ।
प्रभु के चरणों में ही रहता, लगा ध्यान है इनका
मुनि विशद सागर स्वीकारो.........।

सदगुरु से अमृत को पाकर, जीव अमर हो जाता,
पद चिन्हों पर चलकर इनके, सब संभव हो जाता ।
गुरु विराग सागर हैं, जिनके, जन्म सार्थक उनका,
मुनि विशद सागर स्वीकारो.........।

-डॉ. महेन्द्र खरे
बरौदिया कलॉ,
सागर

गुरु वन्दना

(तर्ज- दूल्हे का चेहरा सुहाना लगता है)

मेरे जीवन की अनुपम एक ज्योति हो, हे! गुरुवर तुम विराग सिन्धु के मोती हो
विशद ज्ञान के धारी विश्व प्रसिद्ध हुए, विशद धरा पर विशद सूर्य से उदित हुए
मूरत तेरी लगती अति सुहावन है, विशद नाम तेरा जग में अति पावन है

हो........................

जिला छतरपुर में पद रज से चमन खिला, ग्राम कुपी को तुमसा ज्ञान प्रकाश मिला।।
सबके दिल में बसन्त बनकर छाये हो, तुम पतझड़ में सावन बनकर आये हो।।

हो........................

रोम-रोम है पुलकित ज्यों मधुमास रहे, वाणी से अमृत की हर-पल धार वहे।
अधियारे में दीपक बनकर छाये हो, ज्ञान विशारद ध्वजा दंड बन आये हो ।।

हो........................

स्वयं गुणों की खान विशद में ध्यान धरूँ, आगे क्या मैं गुरुवर का गुणगान करूँ ।।
महावीर के लधुनंदन कहलाये हो, भेष दिगम्बर धारी बनकर आये हो ।।

हो........................

आगे मेरे गुरुवर आपकी मर्जी है, तेरे पावन चरणों में प्रभु अरजी है ।।
हम भटकों को मंजिल प्रभू दिखा देना, विशद ज्ञान गुरु हमको आप सिखा देना ।।

हो........................

-कु. रश्मि भाटिया
बरौदिया कलॉं,

भजन

(तर्ज -आशिक की जिन्दगी ये वो दिन)

(१) इस भव से पार कर दो,
आई शरण तुम्हारी।
हो जाऊँ मगन ऐसे,
गुरु भक्ति में तुम्हारी।
संसार है ये नश्वर इसमें कुछ नहीं,
आओ गुरु हमारे मन ये ही लगन।

(२) आओ यहाँ जो गुरुवर इस भव को पार करने।
शिक्षा तुम्हारी ग्रहण कर हो जाऊँ पार भव से
हो धन्य मेरा जीवन गुरु भक्ति में तुम्हारी।
इस भव से पार.........

(३) सुन विनती गुरु हैं आये और मन ही मन मुस्कराएँ,
हमको खुशी है इतनी गुरु आज आ गए हैं।
करके गुरु की सेवा धन्य जीवन हो गया है।

ब्र. सोनू दीदी
बरौदिया कलाँ (सागर)

गुरु का आशीर्वाद

(तर्ज -तुम्ही हो माता)

आशीष तेरा गुरूवर मैं पाऊँ।
चरणों में हरदम सर ये झुकाऊँ ॥

(१) करूँ हमेशा मैं दर्श तेरा, दर्शन के द्वारा हो हर सबेरा।
गुरुवर की भक्ति, हर पल मैं पाऊँ। चरणों..........

(२) चलूँ हमेशा मैं मोक्ष मग पे, कभी न भटकूँ किसी भी दर पे।
पर वस्तु पाकर, नहीं लुभाऊँ। चरणों में..............

(३) ऋषि मुनियों का सत्संग पाकर, महावीर के गुणों को गाकर।
शुभ ध्यान में ही समय बिताऊँ। चरणों.............

(४) नहीं कभी मन में राग आए, सदा हृदय में समता समाए।
गुरुवर के द्वारा, संयम को पाऊँ। चरणों ....

(५) भव सागर से हो पार नैया, हे! नाथ जग में तुम्हीं खिवैया
'विशद' ज्ञान द्वारा, मुक्ति में पाऊँ। चरणों ....

श्रद्धेय गुरूवर

भाव मेरे हैं वंदन के, गुरूवर पद अभिनंदन के
बीतरागता धारी हैं, वात्सल्यता न्यारी है।
चरणों में स्पर्शन है, महावीर के नंदन हैं ,
मोक्षमार्ग के नेता हैं, कर्म के आप विजेता हैं।
मैंट रहे भव भटकन हैं, जिनकी पद रज चंदन है,
समता जिनके अंदर है, ज्ञान के आप समंदर हैं।
चरण से जिनका मण्डन है, कलीकाल में अर्हन् हैं,
जग में ज्ञान लुटाते हैं, कर्म से आप छुटाते हैं।
हम भक्तों के भगवन् हैं, गुरूवर से भव भंजन हैं।
नाशा दृष्टि रखते हैं, निज आतम को लखते हैं,
कलीकाल में भगवन् हैं, गुरूवर के पद वन्दन है।
वाणी अति ही पावन है, भविजन की मन भावन है।
'विशद' चरण स्पर्शन है, मैंट रहे भव कृन्दन हैं।
भाव मेरे हैं वंदन के, गुरूवर पद अभिनंदन के
वीतरागता धारी हैं, वात्सल्यता न्यारी है।

गुरु वंदना

(तर्ज - भोज पुरी)

गुरूवर के वंदन को जायेगें, हम भक्ति करेंगे।

भक्ति करेंगे गुरु चरणों पड़ेंगे, गुरूवर के गुण गायेंगे ॥

हम भक्ति करेंगे ....।

हाथ जोड़कर दोनों अपने, चरणों में शीष झुकाएँगे

हम भक्ति करेंगे ....।

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, गुरुवर की पूजन रचायेंगे

हम भक्ति करेंगे ....।

मोक्ष मार्ग पर हम सब मिलकर, गुरुवर के संग जायेंगे

हम भक्ति करेंगे ....।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप, गुरुवर से ही पायेंगे

हम भक्ति करेंगे ....।

मुक्ति वधु को पाने हेतू 'विशद' भावना भायेंगे

हम भक्ति करेंगे ....।

गुरुवर जैसा सत् संयम को, पाकर के ध्यान लगायेंगे

हम भक्ति करेंगे ....।

विराग ज्ञानाचरण

(तर्ज - तुमसे लागी लगन)

मेरे गुरुवर परम, मैटो जन्म मरण, विराग प्यारे।

नाशो कर्म गुरुजी हमारे॥

त्याग से राग का नाश होवे, श्रद्धा से धर्म का बीज बोवे।

पाऊँ ज्ञानाचरण, करूँ संयम वरण,विराग प्यारे।

नाशो कर्म गुरुजी हमारे॥

तेरे चरणों में हूँ दौड़ा आया, भक्ति से अपना ये सिर झुकाया।

पाये तुमरे चरण, देना हमको शरण–विराग प्यारे।

नाशो कर्म गुरुजी हमारे॥

मोह ने इस जगत् में भ्रमाया, नहीं धर्म कभी हमको भाया।

किया जग में भ्रमण, पाया जन्म मरण–विराग प्यारे।

नाशो कर्म गुरुजी हमारे॥

दुख से हम भारी घबरा गये हैं, जग में रह कष्ट भारी सहे हैं।

पाना अब शांति है, मिटे सब भ्रांति यह–विराग प्यारे।

नाशो कर्म गुरुजी हमारे॥

सच्चे गुरुवर को हमने है पाया, धर्म से अपना जीवन सजाया।

'विशद' पाये गुरु, होगा जीवन शुरू–विराग प्यारे।

नाशो कर्म गुरुजी हमारे॥

गुरू शरण

(तर्ज - श्री सिद्ध चक्र का पाठ)

श्री विराग सिंधु महाराज संत सरताज
शरण हम आये तव चरणों शीष झुकाए।
तुम ज्ञान अनोखा पाया है, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
जो मोह त्याग संयम की राह बताये।
तव चरणों...........॥

जिनकी वाणी अति शीतल है, धो देती सारे कलमल है।
गुरू की वाणी ही मोक्ष मार्ग दर्शाये।
तव चरणों...........॥

जो वीतरागता धारे हैं, ऐसे ये गुरू हमारे हैं।
गुरु का दर्शन कर, जन जन का मन हर्षाये
तव चरणों.....॥

गुरू धर्म ध्वजा फहराते हैं सद्ज्ञान की ज्योति जगाते हैं।
सद्ज्ञान ज्योति से सर्व तिमिर नश जाये।
तव चरणों...........॥

एकांत ध्यान में रहते हैं अनेकांत की बातें कहते हैं।
निज में रहकर निज का ही ध्यान लगाये।
तव चरणों...........॥

उपसर्ग परीषह सहते हैं नित समता भाव से रहते हैं।
समता की ही शुभ गंग में आप नहाये
तव चरणों........॥

हम 'विशद' शरण में आये हैं भक्ती से गुरुगुण गाये
गुरू चरण वंदना करके भाग्य जगाये।
तव चरणों...........॥

वाणी विशाल

(तर्ज - छोटी-छोटी गैया छोटे-छोटे ग्वाल)

भोले भाले गुरुवर की, धीमी-धीमी चाल।
बोल हैं अनमोल अरु, वाणी है विशाल ॥
ना ही कोई वस्त्र ओढ़े, ना ही कोई छाल।
ज्ञान ध्यान तप से काटें, कर्मों के जाल ॥
भोले................

सु जनों के बन्धु हैं, कर्मों के काल।
कर्मों से लड़ने को, पीट रहे ताल ॥
भोले................

गुरुवर की पूजन को, भर लाए थाल।
बार-बार चरणों में, करते नत भाल ॥
भोले................

रत्नत्रय के धारी, हैं सिन्धु विशाल
चरणों में आये 'विशद', छोड़ के जंजाल
भोले................

पक्षी ज्यों आकर के, बसें डाल-डाल।
गुरुवर का होता है, रहने का हाल ॥
भोले................

मुक्ति पथ

(तर्ज - संदेशे आते हैं)

जो दर्शन पाते हैं, कर्म नश जाते हैं, शांती मिलती है जिन्दगी खिलती है
ज्ञान को पायेंगे मोक्ष को जायेंगे, दर्श विन यह जीवन सूना सूना है।
जय गुरुदेव जय जय..........
किन्हीं जिनराजों के, किन्ही मुनिराजों के, हमे तो जाना है, दर्श शुभ पाना है।
जोड़ना हाथों को, झुकाना माथे को, शुभम् गुण गायेंगे, कि भक्ति पायेंगे।
करेंगे पूजा हम, ना होगी श्रद्धा कम, प्रभु जग त्राता हैं, हमारे दाता हैं।
ज्ञान की ज्योति से, धर्म के मोती से, लक्ष्य को पायेंगे, नहीं रह जायेंगे।
स्वयं के द्वारा ही स्वयं को पायेंगे, ज्ञान को पायेंगे मोक्ष को जायेंगे।
दर्श विन.........जय गुरुदेव
मंगलमय वाणी है, श्री जिनवाणी है, प्रभुजी मंगल हैं, नशाते कल मल हैं।
जहाँ में उत्तम हैं, नहीं कोई उन सम है, आप्त कहलाते हैं, ज्ञान बरसाते हैं,
विरागता धारे हैं, कि जग से न्यारे हैं, चरण रज चंदन है, हमारा वंदन है।
गुरु ये सूरज हैं, सभी हम तारे हैं, ये जग रौशन करते, धर्म सौरभ भरते,
शरण में जायेंगे, गुरुगुण गायेंगे, कि ज्ञान को पायेंगे मोक्ष को जायेंगे।
दर्श विन.........जय गुरुदेव
जहाँ मे भटका हूँ, मोह में अटका हूँ, रहा न मैं सुख से, कहूँ क्या इस मुख से,
जहाँ में भटकाया, नहीं संयम पाया, न प्रभु को जाना है, न प्रभु को माना है।
सजाना जीवन है, समर्पित तन मन है, 'विशद' गुण गायेंगे, कि मुक्ति पायेंगे,
नमन पद में मेरा, मिटे जग का फेरा, कि मुक्ति पा जाये, न जग में भरमाये,
कि संयम के द्वारा, मुक्ती पायेंगे, कि ज्ञान को पायेंगे मोक्ष को जायेंगे।
दर्श विन.........जय गुरुदेव ॥

विशद करूणा

(तर्ज - मैं तो हर जन्म)

मैं तो हर कदम पर, गीत गाऊ तेरे,

ज्ञान पाता रहूँ, चरण आता रहूँ, है तमन्ना यही,

मैं तो..........................।

अवतारी है तू, ज्ञान धारी है तू, अनगारी है तू, निर्विकारी है तू,

लगे भव-भव के, कर्म तुम नाशो मेरे, पद में वंदन मेरा

मैं तो..........................।

ब्रह्मचारी है तू, भवहारी है तू, अघहारी है तू, संकटहारी है तू,

मेरे संकट हरो, आए द्वार तेरे, चरणों भक्ति जगी

मैं तो..........................।

संत श्रेष्ठ है तू, जग ज्येष्ठ है तू, अविकारी है तू, सदाचारी है तू,

कृपा गुरुवर करो, ज्ञान अमृत भरो, शरण तेरी गही.........

मैं तो..........................।

तू है तारण तरण, पाऊँ तेरे चरण, किया तुम को वरण, होवे उत्तम मरण,

मेरे कष्ट हरो, 'विशद' करूणा करो, आश मेरी लगी..........

मैं तो..........................।

आत्म शक्ति

(तर्ज - इतनी शक्ति)

आत्म शक्ति जगा देना गुरुवर, मेरा जीवन भी बन जाये मधुवन।
जिन्दगी की ये खुशियाँ हमारी, तेरे चरणों में करते हैं अर्पण ॥,

खाया कितना है धोका जहाँ में, भूलकर अपनी शक्ति को हमने।
घेरा डाला है आकर के मेरे, चारों ही ओर से मोहतम ने ॥
भ्रम में फँसकर हुआ है हमारी, आत्मा के गुणों का भी कर्षण....(१)

घूमकर हमने सारे जहाँ में, चारों गतियों में जाकर के देखा।
कोई वस्तु रही है न बाकी, किया जिसका नहीं हमने लेखा ॥
दुख उठाये हैं हमने अनेकों, करते बनता नहीं हमसे वर्णन.....(२)

कल्पना सुख की करते रहे हम, मगर दुख ही मिला हमें जग में
शूल बोये स्वयं हमने हरदम, जो पड़े हैं सदा मेरे पग में
भावना है हदय से हमारी, मेरा तन मन ही बन जाये उपवन....(३)

ज्ञान की चाह करते रहे हम, मिला अज्ञान हमको है हरदम
मोह बढ़ता रहा है हमेशा, कोई क्षण में हुआ है नहीं कम
अंतर हो इतना जीवन में मेरे, मेरा जीवन ही बन जाये दर्पण....(४)

जन्म मृत्यु जरा को नशाकर, मुक्ति पा जाऊँ मैं इस जहाँ से
ज्ञान पाऊं 'विशद' मैं स्वयं ही, अंत हो भव भी मेरा यहाँ से
कर्म घाती करूँ मैं सफाया, ज्ञान पाकर के बन जाऊँ अर्हन्....(५)

गुरु देव के चरणों में

(तर्ज - अपनी आजादी)

अपने श्री गुरुवर को हम, हरगिज भुला सकते नहीं
हों कहीं भी वह जहाँ में, हम पहुँच जायें कहीं
हमनें सदियों बाद गुरुवर, की शरण यह पाई है
उनके चरणों में विनय से, श्रद्धा कुछ जगाई है
जिन्दगी पाकर अनेको, स्वयं को छलते रहे
बढ़ सके न एक पग भी, सदियों से चलते रहे
श्रद्धा चरणों में जगी है अब हिला सकते नहीं......(१)

कौन थे हम कौन हैं, और शक्ति अपने पास है
भूलते हो तुम स्वयं यह, प्रभु का उर मैं वास है
जानकर के आत्म से, परमात्म पद को पायेंगे
अब बढ़ाया है कदम, आगे बढ़ाते जायेंगे
मोक्ष मारग से कदम, पीछे हटा सकते नहीं........(२)

गुरु चरण के ही सहारे, हरदम बढ़ते जायेंगे
मुस्किलें कितनी भी आवें, हम नहीं घबरायेंगे
शैल बनकर भी खड़े, हो जायें मेरे सामने
बज्र बनकर पर्वतों से, भी हम लड़ते जायेंगे
हुई जागृत शक्ति अपनी, अब छुपा सकते नहीं.....(३)

गुरु चरण में आज हमने अब समर्पण कर दिया
और की तो बात क्या है माथ पद में धर दिया
जो भी करना है करो, हाथों तुम्हारे जिन्दगी
तुम्हीं माता-पिता दाता, 'विशद' करते बन्दगी
बहु मिटाई जिन्दगी यूँ, यह मिटा सकते नहीं.....(४)

प्रभु ज्ञानामृत

(तर्ज - मुझे ऐसा वर दे दो)

प्रभु ज्ञान मुझे दे दो, गुणगान करूँ तेरा।
सुख दुख की घड़ियों में, प्रभु ध्यान रहे तेरा ॥

मैं दर्श करूँ नित हीं, अरु पूजन करूँ तेरी
शुभ भावों के द्वारा, मति शुभ मति हो मेरी
मेरे उर में भगवन्, श्रद्धान रहे तेरा
सुख दुख............॥
नित उठकर ध्यायूँ तुझे, दर्शन को जाऊँ मैं।
श्रद्धा अरु भक्ति से, नित शीष झुकाऊँ मैं
हर पल मेरे उर में, श्रद्धान रहे तेरा।
सुख दुख............॥
कर्तव्य का पालन हो, न कोई दोष लगे।
संयम को पाने का, मेरे उर में भाव जगे ॥
मम जिह्वा पे हरपल, गुरु नाम रहे तेरा।
सुख दुख............॥
आदर्श तेरे भगवन्, जीवन के सहारे हों।
प्रभु राग द्वेष कल्मस, सब दूर हमारे हों ॥
दो "विशद" ज्ञान हमको, वरदान रहे तेरा।
सुख दुख............॥

गीत

(तर्ज - कर चले)

शत् हमारा नमन प्रभु चरण बन्धुओ
होगा भक्ति से जीवन चमन बन्धुओ
जन्म के पूर्व वादा करें लोग ये
धर्म संयम का पायेंगे संयोग ये
भव का मिट जाये मेरा भ्रमण बन्धुओ
होगा..............।

जन्म पाया था जब व्यथा रोके सही
अपनी करनी की सारी कथा भी कही
जीवन हेतु किये कई यतन बन्धुओ
होगा..............।

कुछ दिनों बाद शाला में पढ़ने लगे
राग के कारण आपस में लड़ने लगे
भूले पूरब के सारे कथन बन्धुओ
होगा..............।

यौवन पाकर हुए भोग में लीन नर
'विशद' परिवार दिखने लगा एक घर
हेतु जीवन के करना मनन बन्धुओ
होगा..............।

वृद्ध होकर के तृष्णा में खो गये
मृत्यु का काल आया अरु सो गये
मोक्ष मारग पर करना गमन बन्धुओ
होगा..............।

गुरु अर्चन

(तर्ज - बहुत प्यार)

गुरु विराग सागर को, शत् शत् नमन्
हमे शरण ले लो², ऋषिराज तुम
गुरु विराग सागर.......

गुरुवर ने छोड़ा है, धन धाम सारा।
अस्थिर जान सब, नगन भेष धारा॥
करते रात दिन हैं, गुरु चिन्तन॥
गुरु विराग सागर.......

तुम ही तो दीनो के, गुरुवर सहारे।
तुम ही तो भक्तों के, हो प्राण प्यारे॥
करूँ जिन्दगी भर, तुम्हारा भजन॥
गुरु विराग सागर.......

गुरुवर की वाणी ने, लाखों को तारा।
सदा डूबते को, दिया है किनारा॥
हृदय में बसा लू, गुरु के वचन॥
गुरु विराग सागर.......

तजूँ मोह माया, शरण लूँ गुरु की।
दिखा देना राहें, हमे शिवपुरी की॥
करूँ तुमको अर्पण, ये श्रद्धा सुमन॥
गुरु विराग सागर.......

कर्मों का सफाया

(तर्ज - मुझे ऐसा वर)

गुरु भक्त पे दया करो, मैं ध्यान करूँ तेरा।
मैं 'विशद' ज्ञान पाऊँ सम्मान करूँ तेरा॥
यह लोक अपार प्रभु, इसका कोई छोर नहीं।
जो बीत चुकी है वह, आती फिर भोर नहीं॥
कर्मों का हनन करूँ, गुरु साथ रहे तेरा..............(१)
ना है कुछ ज्ञान मुझे, ना ही श्रद्धान जगा।
इस तन की सेवा में, सारा ही समय लगा॥
तू अमृत का प्याला, रसपान करूँ तेरा..............(२)
तुमने जो पद पाया, उस पद को पा जाऊँ।
मैं मोक्ष महल जाकर, न जग में भरमाऊँ॥
पा जाऊँ मैं भगवन्, अब 'विशद' ज्ञान तेरा..........(३)
भव सागर से नौका, गुरुवर तुम पार करो।
मैं निज निधि पा जाऊँ, इतना उपकार करो॥
अन्तर में ज्योति जगे, अहसान रहे तेरा..............(४)

हालत इन्सान की

(तर्ज - देख तेरे संसार)

देख तेरे इन्सान की हालत, क्या हो गई जिनराज
कितना बदल गया है आज।
जमीं न बदली समय न बदला, न बदला है आकाश
कितना बदल गया है आज।

(१) हिंसा पशुओं की करता है, धन भी औरों का हरता है
नित कुशील में रत रहता है, मानव लालच में बहता है
भरा हुआ आकण्ठ पाप से, फिर भी करता नाज
कितना बदल गया है आज।

(२) करके ईर्ष्या वह जलता है, मित्र स्वजन को भी छलता है
कुटिल राह पर वह चलता है, भाई शत्रु सा खलता है
समझ नहीं आता है इंसा, के इस मन का राज
कितना बदल गया है आज।

(३) धर्म कर्म सब भूल रहा है, विषयों में ही फूल रहा है
जो शान्ति का मूल रहा है, बनता हृदय का शूल रहा है
धर्म ध्यान शुभ भवसागर का, होता 'शुभम्' जहाज
कितना बदल गया है आज।

(४) राम रहीम वीर के वन्दे, करते काम आज सब गन्दे
पाकर नयन बने हैं अन्धे, करते मद्य मांस के धन्धे
पाप कर्म करके भी करता, 'विशद' स्वयं पर नाज
कितना बदल गया है आज।

गुरु का आँचल

(तर्ज - बहुत प्यार करते)

गुरूदेव करते हैं, तुमको नमन, आंचल तुम्हारा है, तुम्हारी लगन

तुम्हारे बिना न कोई सहारा, तुम्हे यूँ ही पूजेंगे, जब तक है दम

शत बार करते हैं तुमको नमन..........(१)

मुक्ति का मारग, हमको बता दो, जीवन हमारा सफल बना दो

तव बलिहारी[२], करता है मन, गुरुदेव...........

हमे हर घड़ी प्रभु, जी है तुम्हारी, होती है कैसी, भक्ति तुम्हारी

करदो कृपा गुरु[२], मिटा दो करम, गुरुदेव...........

शीष झुकायें, चढ़ाये सुमन, गुरु के चरण में शत्-शत् नमन्

मंजिल को पाने[२], बढ़े हैं कदम-

गुरुदेव...........

वीर गुण गाओ, मिलकर ओ भाई, मन में बसी है, भक्ति तुम्हारी

ध्यायेंगे हम तुमको[२], जब तक है दम

गुरुदेव...........

संसार का नजारा

(तर्ज - रहा गर्दिशों में हरदम)

मिले जिन्दगी में हरदम, गुरुदेव का सहारा।
आशीष से गुरु के, मिले दर्द से किनारा॥

तुमसे चमन हैं सारे, ये चांद औ सितारे।
जाना है आज हमने, संसार का नजारा॥

मिले.................

हर इक मुसीबतों को, हँसकर सहन करेंगे।
मंजिल मिलेगी हमको, संकल्प ये हमारा॥

मिले.................

मंजिल को पाने हेतु, सद राह पर चलेंगे।
जाना है आज हमने, जब से तुम्हें पुकारा॥

मिले.................

आराध्य देव मेरे, परमात्मा हमारे।
अर्पित 'विशद' करूँ क्या, सर्वस्व है तुम्हारा॥

मिले.................

पारस प्रभु की वंदना

(तर्ज - मुझे इश्क है तुम्हीं से)

तारों की बात क्या है, चंदा भी झूम जाये
पारस प्रभु के पद में, सूरज भी सर झुकाये।

(१) बहकर हवायें आतीं, प्रभु का संदेश लेकर
करती हैं वंदना वह, चरणों में ढोक देकर
करके चरण का वंदन, आकाश मुस्कराये
पारस.................

(२) मधुवन में धीमा-धीमा, मकरंद झर रहा है
सौरभ सुगंध द्वारा, मन मोद कर रहा है
फूले हुये गुलों पर, भौंरा भी गुनगुनाये
पारस.................

(३) यह तीर्थराज शाश्वत, शुभ फूल है चमन है
नर-सुर की बात क्या है, करते पशु नमन हैं
मस्ती में झूमते हैं, कई मेघ औ दिशायें
पारस.................

(४) भक्तों की देखने को, मिलती हैं कई कतारें
जो नृत्य गान करते, औ आरती उतारें
पड़ती हैं फीकी सारे, संसार की कलायें
पा॰रस.................

(५) पर्वत की वंदना का, सौभाग्य जगमगाये
छूटे जहान उसका, मंजिल को अपनी पाये
पारस की वंदन कर, पक्षी भी गीत गायें
पारस.................

गुरुवर ऐसा वर दो

(तर्ज - आत्म शक्ति से ओत-प्रोत)

सदज्ञान ध्यान संयम से, घट हृदय हमारा भर दो।

गुरुवर इतना कर दो॥

यह लोकालोक अपार प्रभु, इसका कोई छोर नहीं।

जो बीत चुकी है पूरब में, वो आती फिर भोर नहीं॥

मैं सर्व कर्म का हनन करूँ, हे! गुरुवर ऐसा वर दो..........(१)

गुरुवर इतना कर दो॥

नहीं है कुछ भी नाम मेरा, न ही कुछ वंश कहा है।

काल अनादि से इस तन में, यह चेतन हंस रहा है

उड़ जाऊं पिंजरा तज कर, ऐसा इक अवसर दे दो

गुरुवर इतना कर दो..........(२)

जिस पद को पाया है तुमने, उस पद को पा जाऊँ

सुख पाकर फूल न जाऊँ, दुख में भी न घबड़ाऊँ

दीन बन्धु हे करूणाकर, गुरु हाथ मेरे सिर धरदो

गुरुवर इतना कर दो..........(३)

राह पे तेरी कदम बढ़ाया, कहीं फिसल न जाऊँ

मंजिल को न पायाजब तक, आगे बढ़ता जाऊँ

'विशद' ज्ञान से मा आतम को, गुरु ज्योर्तिमय कर दो

गुरुवर इतना कर दो..........(४)

नाभिनंदन के चरणों में

(तर्ज - धीर मन में धरो)

दया उर में धरो, कष्ट पर के हरो।
चाहते खुशियाँ मन में तो, प्रभु की भक्ति करो।
मोक्ष का मार्ग वरो ॥
नाभिनंदन-नाभिनंदन, बोलो सुबह शाम।
नाभिनंदन के चरणों में, विशद प्रणाम ॥
सिद्ध शिला पे जाके किया विश्राम।
नाभिनंदन के चरणों में विशद प्रणाम ॥
नाभिनंदन....................
देख मरण वैराग्य समाया, भाव तपस्या का तब आया।
छः महिने का ध्यान लगाया, किया आतमा का ध्यान ॥
नाभिनंदन....................
तीर्थंकर पद प्रभु ने पाया, मोक्ष महल का पथ दर्शाया।
हृदय में केवल ज्ञान जगाया, त्याग तपस्या का परिणाम ॥
नाभिनंदन....................
जो भी प्रभु की शरण में जाये, जन्म मरण उसका मिट जाये।
मन में पावन चरण बसाये, बिगड़ी बनाने वाले सबके काम ॥
नाभिनंदन....................
चरणों में प्रभु लगन लगी है, नव जीवन की आश जगी है।
'विशद' जिन्दगी ये महकी है, शिव का आप दिखाया धाम ॥
नाभिनंदन....................

ज्ञान का दीप गुरुवर

(तर्ज - कोई जब तुम्हारा हृदय)

मेरे जब सहारा गुरु हो गये, भक्ति के रंग में स्वयं खो गये
शरण में गुरु की रहेंगे विशद, गुरु संग मिला मिलता ही रहेगा
हमारे लिये..........
पुण्य का फल हमें आज दर्शन मिले, नित्य प्रति दर्श करने को हम जायेंगे
दर्श करके शुभम् श्री जिनदेव का, उनके चरणों की हम शरण पायेंगे
मुक्ति पाने की इच्छा हृदय में जगी, गुरु चरणों में मेरी लगन शुभ लगी
गुरु पद में सब कुछ समर्पित किये..........(१)
दर्श करने से ही कर्म नसते कई, कर्म का भार होता है हल्का स्वयं
लाख तूफान आये मेरी राह पर, कभी गुरुवर की भक्ति नहीं होगी कम
भव विकट वन में हमको भटकना नहीं, प्रभु चरणों को अब पाना है यहीं
छोड़ कर राग सारा आये इसलिये..........(२)
आये हैं हम कहां से अरु करना है क्या, कौन है हम कहाँ जाना हमको अभी
गुरु देते हैं शिक्षा हमारे लिये, भाव अपना 'विशद' शुभ बनाना सभी
ज्ञान का दीप गुरुवर जलाते रहें, मोक्ष मारग पर सबको लगाते रहें
फूल श्रद्धा के हम शुभम् आये लिये..........(३)
हमारे लिये..........

गीत

(तर्ज - अंतर ज्ञान की)

श्रद्धा का गुरु सुमन खिला दो, ज्ञान का उर में दीप जला दो

मेरे गुरुवर मेरे भगवन्, आकर मुझको ज्ञान सिखा दो

भव भव में जाकर भटकाया, मोह ने हमको जग में फँसाया

हमको आकर राह दिखा दो, मेरे गुरुवर............

जग ने हमको अपना बनाया, अपना कहकर खूब रुलाया

अपनों के इस दुःख से छुड़ा दो, मेरे गुरुवर............

ज्ञान से अब तक हीन रहे हम, छाया था बहु मोह महातम

ज्ञान सुधामृत गुरु पिला दो, मेरे गुरुवर............

भक्ति करना नहीं है जाना, 'विशद' ज्ञान को ना पहिचाना

वीतराग का पथ दिखला दो, मेरे गुरुवर............

वंदगी

सत्य पथ की राह पर, चलने से होती वंदगी
आस्था की छाँव में, पलती सदा है वंदगी
ज्ञान का दीपक जलाने, पर संवरती जिन्दगी
हो प्रकाशित ज्ञान से तो, हो ही जाती वंदगी ॥

चाहता है हर कोई पर, प्राप्त करता न इसे
आचरण के रथ पे चढ़कर, चल रही है वंदगी
घोर तम तप से तपाता, जो स्वयं इस देह को
तप से कंचन होने पर ही, होती है शुभ वंदगी
आत्म शक्ति को जगाना है बड़ा मुश्किल अरे !
जागने पर आत्म शक्ति के स्वयं हो वंदगी ॥

वीर वाणी के कथन पे चलके तो देखा नहीं
कैसे इस जीवन में तेरे हो अनूपम वंदगी
मोक्ष मारग पर कदम अपना बढ़ाकर देखलो
आप ही हो जायेगी जीवन में तेरी वंदगी
राही बनकर मोक्ष पथ के बढ़ते रहना तुम 'विशद'
आयेगा वह क्षण 'शुभम' जब हो ही जाये वंदगी ॥

मोक्ष महल की आस में

(तर्ज - रोम-रोम से)

पल हर पल मैं पाऊँ गुरुजी दर्श तुम्हारा तुम्हारा[२]
ऐसी हो हर शाम, भक्ति में होवे ध्यान हमारा

(१) विशद भावना चरण तुम्हारे, भव से मिले किनारा
चरण वंदना करता हूँ, मैं बहे धर्म की धारा
भवसागर में नौका बनकर देना हमें सहारा
पल हर....................

(२) अंजन को भी किया निरंजन, कितनों को है तारा
जिनवाणी की तेरे द्वारा, बहती अमृत धारा
सारे जग से वीतराग मय, दिखता रूप है प्यारा
पल हर....................

(३) महिमा अनुपन सारे जग में, तू है खेवन हारा
भव सागर यह लगंने लगा है, हमको भारी खारा
सीता सती अंजना तारा, का उपसर्ग निवारा
पल हर....................

(४) नैया पार लगा दो मेरी, तू है तारण हारा
जन्म मरण पाया अनादि से, भव न पाऊँ दुबारा
मोक्ष महल को मैं पा जाऊँ, 'विशद' ज्ञान के द्वारा
पल हर....................

गुरु चरण की शरण

(तर्ज - ये मेरी मुहब्बत सुन)

मुक्तक- न जाने किस तरह से जिगर में वेवसी छाई है
हमने अपनो को अपना बनाने की सजा पाई है
यह सोचकर के हमेशा हैरान रह जाते हैं हम।
नहीं थी कल्पना जिसकी वो अपनों से चोट खाई है

ये मेरे गुरुवर जी, विश्वास अब जगा देना।
सद्ज्ञान का ये गुरुवर, शुभ दीप तू जला देना॥
अब तो तेरे चरणों में, जिन्दगी सजाएंगे।
स्वप्न में भी तेरा ही, ध्यान शुभ लगाएंगे॥
मिल गया सहारा अब, जिन्दगी के जीने का।
कड़वे हों या खट्टे हों, घूट सभी पीने का॥
हम हृदय की वेदी पे, तुमको ही बिठाएंगे।
शीष तेरे चरणों में, पल-पल झुकाएंगे॥
तू ही मेरा राही है, तू ही जग सहाई है॥
तेरे विशद चरणों में, मैंने लौ लगाई है।
तूने मुझे जीने की राह शुभ दिखाई है॥
रहना दूर जाकर कहीं मुझको न भुला देना॥ ये मेरे......(१)

आज घड़ी आई है, फूल दिल में खिलने की।

पावन ये घड़ी आई, आज तुमसे मिलने की॥

टूट जायें सब रिस्ते, कोई गम नहीं हमको।

पी लेगे खुश होके, जिन्दगी के हर गम को॥

लोग कितने आये हैं, आयेंगे जमाने में।

जिन्दगी बिता देंगे, कर्म को कमाने में॥

दलदल से मोह के भी छूट नहीं पाते हैं।

जिन्दगी के जीने में ठोकरें कई खाते हैं॥

सदियों से यों हमने कष्ट 'विशद' झेले हैं।

भूल रही मेरी अब, और न सजा देना॥

ये मेरे गुरुवर..........(२)

जिन्दगी के गुलशन में, तूने गुल खिलाये हैं।

दीप तूने आकर के ज्ञान के जलाये हैं॥

जिन्दगी शुभ जीने का, वक्त ये सुहाना है।

पाकर के तुमको अब हमने भी ये माना है॥

दुनिया में कई तेरी, भक्ति को तरसते हैं।

ज्ञान सुधा पाने को ध्यान तुझमें रखते हैं॥

विश्व विभव गुरुवर, तुम वीर के लघुनंदन।

चरणों में भाव सहित, मेरा है अभिनंदन॥

भूल जाये कोई हमे, इसका कोई गम नहीं।

चरणों की छाँव तले हमको तू जगह देना॥

ये मेरे गुरुवर.......... (३)

विरह स्वर

(तर्ज - जियें तो जियें कैसे)

सहें तो सहें कैसे, वियोग आपसे
कैसे रहेंगे विशद, बिन आपके

देख तुम्हें नयन मेरे, तृप्त नहीं होते हैं
याद करके स्वयं मेरे, नयन बहुत रोते हैं
यादें पुरानी, कैसे भुलाएँ, दिल को स्वयं, कैसे मनाएँ
सहें तो सहें कैसे...........

जाने क्यों नयनों में, नींद नहीं आती है
नींद मेरी, दूर बहुत, मुझसे भाग जाती है
सोते हैं तो, स्वप्नों में आते, पाके तुम्हें, हम जाग जाते
सहें तो सहें कैसे...........

तेरे बिना, मुझे नहीं, कुछ याद आता है
जहाँ देखें, वहाँ तेरा, रूप नजर आता है
रग-रग में तू, मेरे वसा है, तेरा ही मुझ पर, 'विशद' नशा है
सहें तो सहें कैसे...........

जिनवर के चरण

(तर्ज - चंदन सा बदन)

जिनवर के चरण, उनका वंदन, गुरुवर की भक्ति को जाना
है कठिन बड़ा दुनिया वालो, शुभ मोक्ष मार्ग पर चल पाना
जिनवर ....

तन है सुन्दर जीवन सुन्दर
गुरु सुन्दरता की मूरत हैं
प्रभु मोक्ष मार्ग पर चलने की
मुझे तेरी बहुत जरूरत है
तव दर्शन बिन जग में भटका
अब और न मुझको भटकाना
जिनवर ....

तुम दर्शन ज्ञान चरण पाकर
शुभ केवल ज्ञान जगाया है
वसु प्रातिहार चौंतिस अतिशय
अरु समवशरण को पाया है
तुमने जो पाया ज्ञान शुभम्
वह ''विशद'' ज्ञान हमको पाना
जिनवर ....

दो ज्ञान हमें श्रद्धान हमें
हम चरण वंदना को आये
दर्शन पाकर जिन गुरुवर का
मन में हम भारी हर्षाये
हम मुक्ति मंजिल पायी न
उस मोक्ष की मंजिल को पाना
जिनवर ....

तन्हाई नजर आई

(तर्ज- वीर लक्ष्मन ने मारे हमारे पति)

(गजल)

जब जब नजर मिलाई तन्हाई नजर आई
जिसके साथ चेतना की सफाई नजर आई
यूँ जिन्दगी जीते जमाना गुजर गया
हमे इस जमाने से रिहाई नजर आई.........
पहले कभी मैं तेरे दर पे नहीं आया
शायद कभी मैंने यूँ मुकद्दर न बनाया
इसमें अपनी ही बेवफाई नजर आई.........
घूमते हम रहे हाथों में, चिराग लिए
हमने अरमानों के कितने, जलाए दिये
यूँ जहाँ में रहने की, रहनुमाई नजर आई.........
गये न कहाँ अनजाने मुसाफिर की तरह
हजारों जन्म गुजारे हैं काफिर की तरह
देखकर तुमको रूह की सफाई नजर आई.........
तेरी सौगात से मेरी तासीर बदल जायेगी
इस संसार सागर से मुझे मुक्ति मिल जायेगी
इस जहाँ से 'विशद' अपनी विदाई नजर आई।

भजन

(तर्ज- आँख हैं भरी भरी)

स्वयं से दूर-दूर, लोग जमाने की बात करते हैं।
आप हैं सोये-सोये, औरों को जगाने की बात करते हैं।
इंसान है वह शक्ति, कि वह क्या कर नहीं सकता
चैतन्य हे अमर साथी, कभी वह मर नहीं सकता
तन है जुदा-जुदा और तुम, इसे मिलाने की बात करते हो ॥
स्वयं से दूर...........

जमाने में भला केसे, ये जिन्दगी जिया करते हैं।
सुकून के नाम पे गम के, घूँट पिया करते हैं।
नींद है भरी-भरी और तुम, जगाने की बात करते हो।
स्वयं से दूर...........

मुझे चाहत थी अपनों से, अपनों की तरह मिलने की
मुझे ख्वाहिस थी दीप में, ज्योति की तरह जलने की
ज्योति है बुझी-बुझी और तुम लौं जलाने की बात करते हो।
स्वयं से दूर...........

जिन्दगी क। सफर लम्बा है, मार्ग पर बढ़ते रहना
मंजिल 'विशद' ऊँचाई पर है, हमेशा ही उड़ते रहना
राही है धीर वीर और तुम, डराने की बात करते हो।
स्वयं से दूर...........

बुलालो गुरुवर अपनी शरण

(तर्ज- मैं तो कब से)

मेरे मन में लगी है लगन, बुलालो गुरुवर अपने चरण
अपने चरण-अपने चरण-अपने चरण
बुलालो गुरुवर.........

(१) गुरु के चरणों में हम जायें
भक्ति भाव से शीष झुकायें
चरणों में हो, शत शत नमन
बुलालो.................

(२) परम पूज्य हे! दया के सागर
रत्नात्रय के हे! रत्नाकर
मंगलमय तव दिव्य वचन
बुलालो.................

(३) तेरी महिमा अजब निराली
तू संयम के बाग का माली
तुमसे है ये विश्व चमन
बुलालो.................

(४) आशीष जिसको भी मिल जाये
उसका ही जीवन खिल जाये
'विशद' मुक्ति पथ होय गमन
बुलालो.................

अरदास

(गजल)

हम तेरे चरण में आये हैं गुलशन की तरह।
सिर्फ एक बार अरदास का मौका दे दो॥
अपनी आखों में वसा रखी है सूरत तेरी।
अपने दिल मे सजा रखी है मूरत तेरी॥
हमें जिन्दगी की शुरुआत का मौका दे दो।

तू तो दरिया की तरह अमृत बहाता रहता।
तू तो सूरज की तरह ताजगी लुटाता रहता।
हमको भी कमल की तरह खिलने का मौका दे दो॥

कैसे पहचानूं तुझे तेरा कोई लिवास नहीं।
कहाँ पर खोजूँ तुम्हें तेरा स्थाई निवास नहीं॥
तू रोज नहीं तो कभी-कभी सौगांत का मौका दे दो।

जिन्दगी में पहली बार तुमसे गुरु पाये मैंने॥
कितने अरमान सजाये हैं तुमको पाके मैंने।
तू सामने खड़े होके इवादत का मौका दे दो॥

नहीं भरोसा 'विशद' आशमां में सितारे का।
मुझे है इन्तजार तेरे मूक इक इशारे का॥
अपने चरणों में मुझे शिकायत का मौका दे दो॥

धर्म से रखना प्रीत

(तर्ज- नफरत की दुनिया)

विषयों की ज्वाला को, शांत कर प्रेम की धारा में, पग रखना मेरे मीत
भोगों के दल दल को, छोड़कर पाना संयम को सुधर्म से रखना प्रीत

(१) ये जिन्दगी तेरी है मात्र इक सपना
ये देह न तेरी किसको कहे अपना
पाया जीवन तूने, जो नश्वर होता है
ये है आगम की सीख- धर्म..........

(२) जाने कब हो जाये, तेरी खत्म कहानी
तू जानके फिर भी, करता क्यों मनमानी
यूँ मोह की रजनी में, दिन ये सारे बीतेंगे
विशद होते न आज प्रतीत- धर्म..........

(३) जन हार कर कोई, न हार को जाने
यों जिन्दगी को भी, न जिन्दगी माने
मति इन्सानों की क्यों, न जाने कहाँ है खोई
वो हार को माने जीत- धर्म..........

जग में सबसे अधिक पावन प्रभु के चरण।
करते हैं जो सदैव ही कल मल हरण।।
छोड़ कर सारे नाते इस संसार के।
कर लिया हमने अब गुरुवर को वरण।।

महावीर बन गुरु आये

(तर्ज - आये हो मेरी जिन्दगी)

आये हो मेरे गुरुवर, महावीर यहाँ बनके
देना गुरुजी हमको, सद्ज्ञान वीर बनके
मैटो विकल्प सारे, गुरुदेव मेरे मन के।

गुरुदेव मेरे भगवन्, मुझे शरण में ही रखना
आशीष के गुरुजी, दो शब्द मुझे लिखना
हम मोह के हैं रागी, इस भव में बालपन के,
आये हो मेरे गुरुवर ॥.........(१)

गर मैं जो भूल जाऊँ तो राह तुम बताना
जाओ जहाँ भी गुरुवर, मुझे साथ ले के जाना
गुरुदेव बसो दिल में, वीणा का तार बनके,
आये हो मेरे गुरुवर ॥......... (२)

तुमने दिया सहारा, जो पास तेरे आया
चरणों में हमने गुरुवर, अनुराग है लगाया
माता-पिता हो दाता, इस लोक में जन-जन के
आये हो मेरे गुरुवर ॥......... (३)

तारण तरण कहाते, गुरुदेव इस जहाँ में
महिमा ना जान पाया, भटका कहाँ-कहाँ में
बरसो 'विशद' गुरुजी, शुभ मेघराज बनके
आये हो मेरे गुरुवर ॥......... (४)

गीत

(तर्ज - अभिनन्दन अभिनन्दन)

शत् वंदन शत् शत् वंदन, गुरु चरण तुम्हारे है
भव सागर में अनुपम नौका, गुरु हमारे हैं
सम्यक् श्रद्धा का उर में, अनुपम सुमन खिलाया
वीतराग वाणी को पाकर, सम्यक् ज्ञान जगाया
गुरुवर की महीमा को गाते, चाँद सितारे हैं,
गुरु चरण तुम्हारे है.........

सम्यक् सारित्र को पाकर गुरु, निज का ध्यान लगाते
सुर नर किन्नर भी गुरुवर के, चरणों में झुक जाते
गुरुवर की मिलकर करते सब, जय जय कारे हैं
गुरु चरण तुम्हारे है.........

गुरुवर की महिमा को हमने, अपने उर में गाया
वीतराग मुद्रा को हमने, अपने हृदय बसाया
भक्त सभी यह खड़े यहाँ तव, चरण सहारे हैं
गुरु चरण तुम्हारे है.........

वीतरागता से शोभित हैं, मोक्ष मार्ग दिखलाये
मोक्ष मार्ग पर जो बढ़ जाये, वह मुक्ति पा जाये
'विशद' हृदय से गुरु चरणों में, नमन हमारे हैं
गुरु चरण तुम्हारे है.........

गजल- इंसान के अंदर शैतान

(तर्ज -)

इन्सान के अन्दर शैतान पलता जा रहा है
साधना से वह फिसलता जा रहा है
जिस्म पर लिवास मन मैं वासना है
इन्सानियत का दम निकलता जा रहा है
सज रहा इन्सान कातिल साधनों से
इन्सान का नक्शा बदलता जा रहा है
शूल चुभते जा रहे हैं इन्सान के पग तले
फिर भी ये इन्सान चलता जा रहा है
चेतना की रोशनी को आज आके थाम ले
जिन्दगी का सूर्य ढलता जा रहा है
न समझ इन्सान तू भूला हुआ मदहोश में
जिन्दगी का इस तरह हर पल निकलता जा रहा है
मेढ़की कीड़ों को खाने, में लगी है
नाग उसको ही निगलता जा रहा है
जल सको तो दीप सा जल के दिखा दो
रोशनी दे करके भी कालिख को उगलता जा रहा है
देने वाला दान देता है 'विशद' ये मुसाफि देख तू क्यों हाथ मलता जा रहा है।

सम्यक् ज्ञान की ज्योति

(तर्ज - अपने दीवाने का)

ज्ञान के खजाने हैं, बोलो जयकार
गुरुवर मेरे अनुपम भोले-भाले

गुरुवर............

(१) मन मन्दिर में मेरे गुरुवर जिस दिन तू आ जावे
सम्यक् ज्ञान की ज्योति मेरे हृदय शीघ्र जल जावे
सभी मनोरथ पूरण होते, गुरुवर के आशीष से
चतुर गति में भटक रहे जो हो जावे उद्धार

गुरुवर............

(२) मंगलमय भक्ति करने से, मंगलमय हो जावे
नर से नारायण बनता जो, चरणों शीष झुकावे
मिल जाते हैं सारे तीरथ, गुरुवर के आशीष से
परम धरम का पालन करते, पालें पंचाचार

गुरुवर............

(३) राग रहित अनुराग सहित गुरु, जगत पूज्य कहलाते
मोक्ष मार्ग की कठिन राह पर, आगे बढ़ते जाते
जल जाते हैं ज्ञान के दीपक, सम्यक् ज्ञान के दीप से
भव सागर से पार करो गुरु, करते चरण पुकार

गुरुवर............

(४) चरण शरण को वरण करे जो, भव सागर तर जाये
कोई बाधा आये सामने, पार उसे कर जाये
जग जाये सौभाग्य हमारे, चरण कमल की धूलि से
'विशद' गुरु भक्ति वंदन है, नर जीवन का सार

गुरुवर............

तन के दीवाने

तन के दीवाने इस जग में, चेतन की पहिचान नहीं
नहीं जहाँ में दिखता कोई, जिसके कुछ अरमान नहीं

स्वार्थ भावना में जलकर के, अपना समय गवांते हो
आँख में आँसू बहते जिगर में, स्वयं ही शूल चुभाते हो
आके नहीं गया हो जग से, ऐसा कोई इंसान नहीं।
नहीं जहाँ............।

जब तक तेरी जेब में पैसा, तुझ को सब अपनाते हैं
पैसा खत्म जवानी वीती, रिश्ते काम ना आते हैं।
मरकर भी जो साथ निभाये ऐसा कोई मेहमान नहीं
नहीं जहाँ............।

आया कौन साथ में तेरे, कौन साथ में जायेगा
चेतन तेरा सच्चा साथी, जीवन साथ निभायेगा
अपनों की पहचान 'विशद' यूँ होती है आसान नहीं।
नहीं जहाँ............।

खुशयाँ नहीं ये गम ही देते, जो अपने कहलाते हैं
फूल दिखाकर कदम-कदम पर, छुपकर शूल चुभाते हैं
दाव पर लगा दिया है जीवन, फिर भी कोई एहसान नहीं।
नहीं जहाँ...........।

गजल

कुछ लोग जिन्दगी से, अन्जान हो गये।
इन्सानियत को छोड़ के, हैवान हो गये ॥
जो पीड़ा समझते पर की, अपने समान हैं।
विश्वास कीजिए वह, इन्सान हो गये ॥
हर शख्स परेशान सा, आता यहाँ नजर।
खुशियों के गुलिस्तान भी, वीरान हो गये ॥
क्या वक्त का नजारा, कुहराम मच रहा।
कयामत के इशारे भी, बदनाम हो गये।
मंजिल के पास जाने का, लक्ष्य बन गया।
हम आज जमाने से, अन्जान हो गये ॥
हमराह बनके हमको, बढ़ना है राह पर।
दिल में हमारे इस तरह, अरमान हो गये ॥
बेताज बादशाह है यह, आत्मा 'विशद'।
पहचान जिसने कर ली, भगवान हो गये ॥

भजन

(तर्ज - बेटी घर बाबुल)

बिना गुरु आपके जग में, नहीं कोई हमारा है।
चरण की तव शरण आया, यही हमको सहारा है ॥
तू ही जग में तरण तारण, भवोदधि तरण का कारण।
तू ही सत् ज्ञान दाता है, तू ही सुख देन हारा है ॥
बिना गुरु आपके.........

तू ही जगजीव का दाता, तू ही चरित्र का दाता
दर्श कर ज्ञान जग जाता, तू ही जग में सितारा है ॥
बिना गुरु आपके.........
जगत् में बस तू ही मेरा, मिटे कर्मों से मम फेरा।
सहारा है ''विशद'' तेरा, मैटते तम जो कारा हैं ॥
बिना गुरु आपके.........

तू ही अज्ञान का हर्ता तू ही शिव पंथ का कर्ता।
तू ही मुक्ति का है भर्ता 'विशद' सेवक तुम्हारा है ॥
बिना गुरु आपके.........

भजन

(तर्ज - दिन हो चाहे रात हो हम दोनों का साथ हो)

पाने वालों ने क्या-क्या नहीं पाया होगा
अपने स्वार्थ के लिए कितनों को न सताया होगा
हम भटक रहे हैं संसार सागर में सदियों से
परमात्मा को हृदय में अपने न बसाया होगा।

गर्मी या बरसात हो सर्दी झंझावात हो
चरणों में तेरे प्रभु सदा सदा ये साथ हो
बस तेरा मैं नाम लूँ सुबहा और शाम लूँ
तेरे चरणों में स्वयं, जाके विश्राम लूँ
बस हृदय से तुझे नयनों में बशा लूँगा मैं
मेरे नयनों, में बस तू ही तू समाया होगा
पाने वालो ने..........
छ ाई है मन में खुसी तन में भी उल्लास है
मिल जाए आशीष मुझे बस इतनी सी आस है,
जब तक तन में श्वाँस हो जीने की भी आस हो
शुभ चरणों में ये सदा गुरुवर के भी दास हो
जिस तरह चेतन को चन्दन बनाया है
वैसे विशद औरों ने पहले ना बनाया होगा
पाने वालों ने ....

गज़ल

मेहनत से कली फूल, उगाता है वागवाँ।
अमृत कली को लेके, पिलाता है वागवाँ॥
करता नहीं है खेद, गुलिस्तान गुलों की।
लेकर कतरनी काट, सजाता है वागवाँ॥
उड़ती थी जहाँ धूल, कटीली थी झाड़ियाँ।
वीरान गुलिस्तान, बनाता है वागवाँ॥
सदियों से लगे आये, कचरे के ढेर थे।
उस ढेर को अग्नि से, जलाता है वागवाँ॥
खिलते हैं फूल पाकर, सूरज की रोशनी।
हँसकर गुलों को आप, हँसाता है वागवाँ॥
फूलों में जाके भरता, मकरन्द चाव से।
सारे जहाँ में खुसबू, लुटाता है बागवाँ॥
मडराते 'विशद' भौंरे मकरन्द चूसते।
टूटे हुए दिलों को, मिलाता है वागवाँ॥

गज़ल

(तन नहीं छूता)

इस महासागर में कोई, नाव चलना चाहिए।
तैरती है हिम शिला, पर्वत सी गलना चाहिए॥
नाग के फड़ की तरह, फैला हुआ काला तिमिर।
दूर करने के लिए कोई, दीप जलना चाहिए॥
बाग में कलियाँ कई, उगती दिखाई दे रहीं।
इस बगीचे से नई, कलियाँ भी खिलना चाहिए॥
हर नगर हर गाँव की, हर शहर या देश की।
हो किसी भी हाल में, सूरत बदलना चाहिए॥
गन्दगी का ढेर चारों, ओर दिखाई दे रहा।
गन्दगी के बीच से, बचकर निकलना चाहिए॥
सांझ के पहले कोई, दीपक जला लो ये विशद।
बाद में फिर जिन्दगी की, सांझ ढलना चाहिए॥

मत पूछो दोस्त मुझे किसने लूटा है,
जिसे गले लगाया उससे ही दिल टूटा है।
दोष किसी और का नहीं मेरे भाई जमाने में,
क्योंकि मेरे स्वयं के भाग्य का घड़ा फूटा है॥

विराग वाणी

(तर्ज - जिनके पौरुष से चमका)

उनके चरणों में है मेरा शत् शत् नमन्, विराग वाणी से गूँजा है सारा गगन।
पंच परमेष्ठी का, ॐकार में सार है, उनके चरणों से करता ये जग प्यार है।
धन्य भक्ति से होते वह जीव हैं, पावन जीवन हुआ, जो भी करीब हैं।
इनके आदर्श पर गर्व करता चमन........(१)

अर्हंत देते जहाँ को उपदेश हैं, जग में रहते हुए जग से विशेष हैं।
फूल खिलते गगन में जब चलते हैं ये, देव अतिशय करें हर पल-पल नये।
धरती होती चमन करते गगन में गमन.........(२)

कर्म नशते सभी होते यह सिद्ध हैं, जग भटकते रहें जो कर्म से विद्ध हैं।
अष्टम वसुधा पे जा ज्ञाता द्रष्टा बने, अशरीरी हुए कर्म सारे हने।
उत्पाद व्यय ध्रौव्य से रहते निज में मगन.........(३)

दीक्षा देते हुए पालें आचार वह, प्राणी मात्र से करते हैं प्यार वह।
तप से तपते हुए पाले दश धर्म हैं, ऐसे आचार्य श्री हनते बसु कर्म हैं।
तप से तपते हुए मेंटे जग की तपन.........(४)

पढ़कर के संतों को ज्ञान देते स्वयं, ऐसे संतों को कहते उपाध्याय हम।
ज्ञान ध्यान तप में रहते लीन हैं, ऐसे साधू हैं जो संग से हीन हैं।
इनके पद में 'विशद' मेरी लागी है लगन.......

भजन

(तर्ज- मेरा जीवन कोरा कागज)

जब तलक है श्वाँस तन में, पास आते हैं
श्वाँस छलते ही स्वजन, मिलके जलाते हैं

स्वार्थ के बस सभी तुमको, अपना कहते हैं।[2]
साथ में तेरे सभी हिल-मिल के रहते हैं।[2]
बहु प्रशंसा के सभी जन, गीत गाते हैं
श्वाँस छलते ही...........

राह देखेंगे सभी यदि , बाहर गये कहीं
कहते फिरते हैं सभी से, आये हैं वो नहीं
नहीं आये यदि तो, खाना ना खाते हैं
श्वाँस छलते ही...........

स्वार्थ पूरण होते ही, मुख मोड़ लेते हैं
ठोकरें दर-दर की खाने को, छोड़ देते हैं
'विशद' अपने सगे ना फिर, पास आते हैं
श्वाँस छलते ही...........

निज घर की सफाई

(तर्ज- मांई नी मांई मुंडेर)

चेतन के पिंजड़े में भाई, झाडू रोज लगाना
भूला क्यों तू निज घर पगले, उसको साफ बनाना
कण कण मिलकर के इस तन का, होता है निर्माण अरे!
इस तन से यह चेतन होता, मेरे भाई पूर्ण परे
इस नश्वर तन के हेतु अब व्यर्थ ना समय गँवाना
चेतन के..........(१)

यह तन एक मुसाफिर खाना, फिर फिर आता जाता है
भूल स्वयं को तन के पीछे, अपना समय गँवाता है
यह तन जीवन पाकर उसमें, ज्ञान का दीप जलाना
चेतन के..........(२)

ये तन नाशवान है भाई, चेतन में निर्मलता है
पल पल में यह पूरण होता, पल पल में ही गलता है
मोह नींद में सोता चेतन, उसको विशद जगाना
चेतन के..........(३)

चेतन चिन्मय और चिरन्तन, चमत्कार चित् ज्ञायक है
नित्य निरन्जन ज्ञान स्वरूपी, तीन लोक दर्शायक है
यह अपूर्व अवसर नर भव को, व्यर्थ में नही गँवाना
चेतन के..........(१)

सोनागिरी महिमा

(तर्ज- आये हो मेरी जिन्दगी में)

सोनागिरी पे स्वर्णिम, सौभाग्य जगमगाए।
चन्दा प्रभु के चरणों, जाकर के सिर झुकाए॥
चंदा भी चाँदनी में, मस्ती से झूमता है।
आकर के सामने से, चरणों को चूमता है॥
विखरे सितारे देखो, दर्शन की लौ लगाए - चन्दा प्रभु.......(१)
पूरब दिशा से सूरज, विखरा रहा है लाली।
आकर के मंदिरों का, मानो बनाहो माली॥
सोनागिरि की शोभा, हमसे कही ना जाए - चन्दा प्रभु......(२)
स्वर्णिम शिखर के ऊपर, कइयक शिखर अचल हैं।
संतों की साधना का, सारा रहा ये फल है॥
ये सिद्ध भूमि लोगों की, बिगड़ी हुई बनाए- चन्दा प्रभु......(३)
ये तीर्थ राज पावन, पावन बनाने वाला।
भक्तों ने तीर्थ पर ही, जाकर के डेरा डाला॥
बिगड़ी विशद हमारी, हम भी बनाने आये- चन्दा प्रभु.......(४)
दीपावली दशहरा हर रोज लगता सावन।
मोरों का नृत्य लगता, कितना विशद सुहावन॥
वह नाचते हैं खुलकर घनघोर घटा छाये - चन्दा प्रभु.......(५)

मिटे भव भ्रमण

(तर्ज- बहुत प्यार करते हैं)

मेरी जिन्दगी के, हो आलय तुम्ही
मेरी आस्था के, हिमालय तुम्ही
शिवपथ के दाता, हे! प्रज्ञा श्रमण
तुम्हारे चरण में है, शत् शत् नमन
होठों पे रहती है, मुस्कान हरदम
नशाने चले आप, कर्मों का कर्दम
पद चूमती आके, मंद पवन
तुम्हारे चरण...........

श्रद्धान तुम हो, सद् ज्ञान तुम हो
मेरी जिन्दगी के, सम्मान तुम हो
तुमसे हुआ मेरा, जीवन चमन
तुम्हारे चरण...........
मेरी जिन्दगी के, 'विशद' हो सहारे
चरण तव रहें नित, हृदय में हमारे
आशीष दो मम, मिटे भव भ्रमन
तुम्हारे चरण..........

क्षमा मूर्ति हे! गुरुवर

(तर्ज - भोले भाले भगवन मेरे)

क्षमामूर्ति हे ! गुरुवर मेरे, क्यों तुम मुझसे रूठे हो
बात बात पर हँसने वाले, क्यों चुप होकर बैठे हो
चेहरा ऊपर करके देखो, चरणों शीष झुकाते हैं
क्षमामूर्ति.............

बड़े चाव से आशा लेकर, दर्शन करने आते हैं,
क्षमामूर्ति.............

हाथ जोड़कर वन्दन करते, शुभाशीष गुरुवर दे दो[२]
क्षमामूर्ति.............

हमने तुम को अपना माना, तुम्ही हमारे दाता हो[२]
क्षमामूर्ति.............

तुम्ही हो माता-पिता हमारे, तुम्ही हमारे भगवन् हो[२]
क्षमामूर्ति.............

क्षमा करो हे ! मेरे गुरुवर, आप जरा सा मुस्करा दो[२]
क्षमामूर्ति.............

जिन्दगी जीने के लिए, ठोकरें खाना पड़ रहा है,
दर्द सीने में छुपा कर, मुस्कराना पड़ रहा है।
अब तो आदत पड़ गई है, मेरी कांटों पर चलने की,
गम से गमगीन होकर भी, आज गाना पड़ रहा है।

गुरुवर जग की शान

(तर्ज - रघुपति राघव राजा)

विराग सिंधु गुरू संत महान, करते हैं जग का कल्याण।
ध्यान लगाना जिनका काम, भजते हैं नित आतम राम॥
सहें परिषह आठों याम, जिनको है आराम हराम।
चरण कमल में जिनके आन, भविजन करते भक्तिगान॥
जो करते गुरूवर का ध्यान, करते निजानंद रसपान।
बालक बूढ़े और जवान, गुरू चरणों में करें प्रणाम॥
कलीकाल में गुरू महान, चलते फिरते तीरथ धाम।
सप्त तत्व का करें बखान, करते तप से कर्म की हान॥
गुरूवर गुण रत्नों की खान, पाने चले हैं केवल ज्ञान।
तारण तरण है गुरू का नाम, हो जाता मनवांछित काम॥
विशद सिंधु चारों ही याम, नत हो करते चरण प्रणाम।
विशद प्राप्त हो जाये ज्ञान, देना गुरूवर यह वरदान॥
इन गुरूवर से जग की शान, हम सबका इनसे सम्मान।
गुरूवर रत्नत्रय की शान, करते हैं गुरू का गुणगान॥

गीत

(तर्ज- जब हंस तेरे तन से कहीं उड़ के जाएगा)

जब संत तेरे द्वार से, खाली यूँ जाएगा।
ए भक्त बता किससे, नाता लगाएगा॥

ये मित्र सारे जो तुझे, करते हैं आज प्यार।
काल के आगे नहीं, कोई काम आयेगा॥

तेरे ही तुझे मिलके, जला देंगे आग में।
तन ये तेरा क्षण में, खाक हो ही जायेगा॥

अवसर है आज राह पर, इनकी तू चला चल।
अवसर निकल रहा है, नहीं बाद आयेगा॥

चलते हैं राह पर ये, सभी को चला रहे।
अवसर के चूकने, पर आँसू बहायेगा॥

तू शरण को ग्रहण कर, चरण छाँव में।
वरना 'विशद' ये अवसर, फिर से ना आयेगा॥

नारी के माथे की बिंदी कहती है ये रोकर
इस माथे ने जगह जगह पर खाई कितनी ठोकर
करके सत् पुरूषार्थ जगाओ अपना पौरुष
बनो स्वयं स्वाधीन न रहो किसी की होकर।

गुरुवर की वाणी

(तर्ज- मधुवन के मंदिरों में भगवान बस रहा है)

गुरुवर की वाणी द्वारा अमृत बरस रहा है
चरणों की वंदना को मनवा तरस रहा है।
सद्ज्ञान के दिवाकर, चारित्र के हैं सागर
नयना पवित्र होते, दर्शन तुम्हारे पाकर।
तव ज्ञान की किरण से, अज्ञान नश रहा है। गुरुवर.......
श्रद्धान के हो आलय, वात्सल्य के हिमालय
गुरुदेव इस जहाँ में, चैतन्य के जिनालय
दर्शन को प्राप्त करके, प्राणी सम्हल रहा है। गुरुवर........
गुरुवर के पद कमल में, कई भव्य भ्रमर आते
वह मुक्त कंठ से फिर, गुरु यशोगान गाते।
गुरुवर के वचन का जग, रसपान कर रहा है। गुरुवर.........
गुरुदेव ने जगत् को, सत् मार्ग है बताया
उस राह पे स्वयं ही चल करके भी दिखाया
इन्सान है 'विशद' जो सत् राह वर रहा है। गुरुवर...........

गीत

(तर्ज- देख तेरे संसार की हालत)

मोक्ष मार्ग के त्रय रत्नों में श्रद्धा रत्न प्रधान

श्रद्धा धार बनो भगवान।

जब जब मिथ्यामति ये होगी, स्वाभाविक गुण की क्षति होगी।
क्रोधादिक का भाव उमड़ता, राग द्वेष अरु कल्मस बढ़ता ॥
मोह और मिथ्या को तजकर करना है श्रद्धान

श्रद्धाधार बनो भगवान............

हमने कितना ज्ञान बढ़ाया, किन्तु सत् श्रद्धान न पाया।
ज्ञान में सारा समय बिताया, धर्म कर्म ना हमें सुहाया।
अहंकार को तजकर पाऊँ, भाई सम्यक् ज्ञान ॥

श्रद्धाधार बनो भगवान............

सत् संयम के भाव ना जागे, पंचेन्द्रिय के विषय ना त्यागे।
सदाचरण हमको ना भाया, जो कुछ मिला तो हमने खाया।
संयम को पाकर करना है, 'विशद' आत्म कल्याण ॥

श्रद्धाधार बनो भगवान............

अग्नि में कई बार तपाये, सिर के भारी केश बढ़ाए।
पर्वत ऊपर ध्यान लगाया, सम्यक् तप को कभी ना पाया।
इच्छाओं का रोध है करना, करना आतम ध्यान ॥

श्रद्धाधार बनो भगवान............

हमने देव शास्त्र गुण पाये, किन्तु मेरे हृदय ना भाये।
पहुँचे नहीं पास में उनके, पहुँचे तो अन्जाने बन के।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण है, जग में विशद महान ॥

श्रद्धाधार बनो भगवान............

गीत

(तर्ज- दिल के अरमाँ)

वीर की वाणी नहीं सुन पायेगा।
मोह का मेहमान जो बन जायेगा ॥

छूट जायेगा प्रभु से बास्ता।
टूट जायेगी प्रभु से आस्था ॥

ज्ञान में होगा तेरे मिथ्यापना।
छायेगा अज्ञान तम भारी घना ॥

आचरण तुमको नहीं फिर भायगा।
हाथ में जो भी मिला फिर खायगा ॥
वीर की वणी नहीं..........

क्रोध फिर दिखलायेगा अपना असर।
मान के कारण नहीं होगा बसर ॥

छल चलाएगा कुटिल अपनी चलन।
लोभ रोकेगा कई करके जतन ॥

पर को अपना अपना जग में गायेगा।
भाव खोटे अपने तू बनाएगा ॥
वीर की वणी नहीं..........

कौन थे हम कौन हैं क्या कर रहे।
कर्म से घट अपना खाली भर रहे ॥

कर्म के ही फल से पाया ये जहाँ।
कर्म के ही दिख रहे हैं ये निशां ॥

साथ में तेरे नहीं कुछ जायेगा।
मौत का जब काल सर पे आयेगा ॥
वीर की वणी नहीं..........

गीत

(तर्ज- तीरथ करने चली सखी)

करते हैं हम बालक विनती, चातुर्मास कराने को।
विशद भाव से आये हम सब, गुरुवर तुम्हे मनाने को॥

सोच रहे नर नारी सारे, गुरुवर नगर में आयेंगे।
ज्ञान सिंधु से गुरुवर मेरे, ज्ञान की गंग बहायेंगे॥
वन्दन करते गुरु चरणों में, ज्ञान सुधारस पाने को।
विशद भाव से आये..............॥
दर्शन करने की अभिलाषा (गुरुवर) सबके मन में छाई है।
चातुर्मास करेंगे गुरुवर, मन में आस लगाई है॥
श्रीफल लेकर आये गुरुवर, आपके लिए लिबाने को।
विशद भाव से आये..............॥
गुरुवर अब आशीष दीजिए, मन में शांति हम पावें।
करें तैयारी मंदिर जाकर, खुशी खुशी घर को जावें॥
नहीं रहा है गुरुवर मेरे, व्यर्थ में समय गवाने को।
विशद भाव से आये..............॥
मन में उठी उमंगे कितनी, छाया कितना है उल्लास।
गुरुवर का दर्शन करना है, सबके मन में यही है आस॥
शब्द नहीं हैं पास हमारे, गुरुवर तुम्हे मनाने को।
विशद भाव से आये..............॥
मुस्कराहट गुरुवर की कहती, भाई चिन्ता नहीं करो।
चातुर्मास वहीं पर होगा, मन में बिल्कुल नहीं डरो॥
अगला कदम बढ़ेगा अपना, बिगड़ी हुई बनाने को।
विशद भाव से आये ....॥

गीत

(तर्ज- भारत का रहने वाला हूँ)

दुखियों के प्रभु दुखहर्ता, जग जीवों के त्राता हो।
विशद भाव से वीर प्रभु के, चरणों नित नत माथा हो॥
जिस भक्त का पद में शीष झुके, वह भक्त धन्य हो जाता है।
यदि छाया हो दुःख क्लेश; अनायास वह खो जाता है।
प्रभु के चरणों की भक्ति से[२], सुख शान्ति[२] पा जाता है।
विशद भाव से.........।

प्रभु ओंकारमय वाणी से, जग को सन्मार्ग दिखाते हैं।
जो हृदय बसाते जिनवाणी, वह स्वयं प्रभु बन जाते हैं।
जिनवाणी को जिसने पाया[२], वह ज्ञानी[२] तब हो जाता है।
विशद भाव से.........।

हैं स्वयं बोध स्व के ज्ञाता, जो रमण स्वयं में करते हैं।
जो रहें स्वयं में स्वयं लीन, औ स्वयं आपके ज्ञायक हैं।
दो विशद ज्ञान भगवन् हमको[२], तू सबका ज्ञान प्रदाता है।
विशद भाव से.........।

सारा शहर क्यों आज, गुलिस्तान सा दिख रहा,
सूर्य चांद और तारा भी आज, मेहमान सा दिख रहा।
कुछ अजीव सी बहार, उठी है मेरे मन में,
आज इंसान भी मुझे, 'विशद' भगवान सा दिख रहा।

भजन

(तर्ज- माया के इस पिंजरे)

महामंत्र को विशद भाव से, नित्य प्रति जो गाए।
अल्प समय में उस इन्सां को, सुख शांति मिल जाए॥
महामंत्र...............

कर्म शुभाशुभ किए जीव ने, उसके फल को पाता
चतुर्गति में अशुभ कर्म ही, बारम्बार घुमाता
अशुभ कर्म का बंध मंत्र के, जाप से ही नश जाए
महामंत्र...............

महामंत्र के जाप से भाई, अंजन हुआ निरंजन
विद्या पाकर चला मेरू पर, प्रभु का करने वंदन
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से भव से मुक्ति पाए
महामंत्र...............

शुभ भावों से ओतप्रोत हो महामंत्र तव ध्याया
जब राजा श्रेणिक ने सुत को सूली पर बैठाया
सूली से सिंहासन आकर, वहाँ पे देव बनाए
महामंत्र...............

अशुभ कर्म आया सीता का, अग्नि कुण्ड बनाया
देवों ने अतिशय दिखलाया, सुंदर कमल खिलाया
'विशद' मंत्र का जाप करें वह, महामंत्र हो जाए
महामंत्र...............

भजन

(तर्ज- चाँदी जैसा रूप)

अर्हत् जैसा रूप है तेरा, विशद है तेरा ज्ञान
एक तू ही भगवान है गुरुवर, बाकी सब अन्जान

निज के अंदर रमण करें जो, निज में ही खो जाएँ।
वीतरागता धारण करके, निज का ध्यान लगाएँ ॥
सुर नर किन्नर सुख ना पाते, गुरुवर वह सुख पाएँ।
सुख दुःख में समता रहती है, चेहरे पर मुस्कान ॥
एक तूही..................

भटक रहे अज्ञान के कारण, उनको राह दिखाई।
हमको भी गुरु राह दिखाओ, मेरी बारी आई ॥
शरण नहीं है जग में कोई, गुरुवर तुम्हीं सहाई।
कृपानाथ हो कृपा कीजिए, होगा बहु अहसान ॥
एक तूही..................

एक तमन्ना गुरुवर मेरी, तव पद मैं पा जाऊँ
रत्नत्रय की नौका पाकर, मैं शिवपुर को पाऊँ
निज स्वभाव को पाकर गुरुवर, स्वयं आपको ध्याऊँ
'विशद' भावना भाता हूँ मैं, हों पूरे अरमान
एक तूही..................

भजन

(तर्ज- आया शरण ठोकरें जग की खाकें)

आया चरण में, तेरे दर्श पाने
चरणों के जल को, सिर पे चढ़ाने

आया चरण............

तेरी वन्दना से, कर्म का नाश होता
सुखी जिंदगी, स्वर्ग में वास होता
मैं आया शरण में, यूँ बिगड़ी बनाने

आया चरण............

तेरे द्वार की है यूँ, लीला निराली
जो भक्ति से आये, ना जायेगा खाली
ना पाई शरण हम, कई द्वार छाने

आया चरण............

कई जन्म पाके, ना तेरे दर पे आया
कभी न हृदय में तुमको बसाया
रहे हम 'विशद', मोह के ही दिवाने

आया चरण............

अब जाना यतन से, वतन छोड़कर के
इस जालिम जहाँ से, मुख मोड़कर के
मेरी जिन्दगी के तुम्ही हो खजाने

आया चरण............

क्षमा भावना

क्षगा कर क्षमा कर, क्षमा करना भाई
क्षमा के हृदय में समता समाई
किया अपराध कुछ मैंने, तुम्हारे जाने अन्जाने।
सभी से मित्रता मेरी, कोई माने या ना माने ॥
रहे यह भावना मन में, जिनेश्वर के सभी नंदन।
क्षमा के भाव आने से, ये धूली भी बने चन्दन ॥
क्षमा कर क्षमा कर क्षमा करूणाधारी।
हम आये हुये हैं शरण में तुम्हारी......॥

हुआ त्रियोग से छेदन, किसी भी जीव का हमसे।
क्षमा करना सभी हमको, नहीं कुछ बैर था उनसे ॥
किसी का द्वेष मुझसे हो, या दूषित भाव आये हों ।
क्षमा उनसे भी चाहूँगा जबाँ से मम सताये हों ॥
क्षमा के बिना ही यह दुनिया सताई।
हम आये हुये हैं शरण में तुम्हारी......॥

क्षमा करना सभी हमको, क्षमा हम सब को करते हैं।
क्षमा वाणी से कहते हैं, हृदय में शांति धरते हैं ॥
क्षमा का स्त्रोत बरसाना, वीर का धर्म कहता है।
क्षमा भूषण 'विशद' मन का जहाँ पर वीर रहता है।
क्षमा कर क्षमाकर क्षमा हमने पाई ॥
क्षमा पाट देती है हृदयों की खाई।
हम आये हुये हैं शरण में तुम्हारी......॥

(तर्ज- मुझे ऐसा वर)

गुरु भक्त पे दया करो, शुभ ध्यान करूँ तेरा
मैं विशद ज्ञान पाऊँ, सम्मान करूँ तेरा

यह लोक अपार प्रभु, इसका कोइ छोर नहीं।
जो निकल गई है वह, आती फिर भोर नहीं॥
कर्मों का हनन करूँ गुरु साथ रहे तेरा...........(१)

न है कुछ ज्ञान मुझे, न ही श्रद्धान जगा।
इस तन की सेवा में, सारा ही समय लगा॥
तू अमृत का प्याला, रसपान करूँ तेरा............(२)

तुमने जो पद पाया, उस पद को पा जाऊँ।
मैं मोक्ष महल जाकर, न जग में भटकाऊँ॥
पा जाऊँ हे ! भगवन्, मैं विशद ज्ञान तेरा.........(३)

भव सागर से नौका, गुरुवर तुम पार करो।
मैं निज निधि पा जाऊँ, इतना उपकार करो॥
अन्तर में ज्योति जले, अहसास रहे तेरा...........(४)

गीत

(तर्ज- जियो और जीने दो)

हरे भरे मधुवन में, पार्श्व का ठिकाना है।
तीर्थराज की धूली, शीष पे चढ़ाना है ॥

पर्वत की चोटी पर, चरण चिन्ह अंकित हैं
चरण वन्दना करने, हमको वहाँ जाना है

तीर्थराज रग रग में, वश गया है धड़कन में
तीर्थ वन्दना करके, ये जिन्दगी सजाना है

जिन्दगी है गम से भरी, गम कहाँ नहीं मिलता
गम सभी भुलाने का, वक्त ये सुहाना है

जिन्दगी है कितनी बड़ी, अन्त आखिर आयेगा
इसके पहले श्रद्धा को, हृदय में जगाना है

भाव सहित वन्दन कर, दुर्गति से बच जाओ
दुर्गति के हेतु पड़ा, सारा ये जमाना है

इस तीर्थ से तीर्थंकर, सिद्धी को पाए हैं
हमको 'विशद' सिद्धी का, स्थान ये बनाना है

तीर्थराज का कण कण, पावन है मंगलमई
तीर्थराज को अपना, शीष ये झुकाना है ॥

जीवन की भूल

तुमने क्या देखा जीवन में, जो तुम समझ ना पाए मन में
भूल स्वयं को तू ये चेतन, खोया रहता तन में
इसीलिए तो भटक रहा है, बार-बार त्रिभुवन में।........ तुमने

जन्म समय की कठिन वेदना, दुख है बालापन में
बाल अवस्था खेल गुजारी, बौराय योवन में ।........तुमने

पत्नि अरु परिवार संगाती, पड़े मोह बंधन में
शीत उष्ण की बाधा सहकर, सुख भाने योवन में।........तुमने

संत् आदर की चाह जगी फिर, ग्राम नगर जन-जन में
भूल गए तन मन धन पाकर, मौत चले क्षण-क्षण में।........तुमने

घर परिवार पुत्र पत्नि के, पड़े मोह बंधन में
हाथ पैर थक जायेंगे तब, क्या जागे पचपन में।........तुमने

दया धर्म तीरथ यात्रा की, जगे भावना मन में
नहीं गये गिरनार, द्रोणगिर, पावापुर मधुवन में।........तुमने

सुख-शांति की चाह में भटके, खोजा है कण-कण में
उत्तर जाओ अब 'विशद' ज्ञान अरु, सत् संयम के रण में
तुमने क्या देखा जीवन में..........

भजन

(तर्ज- हे गुरु दाता ज्ञान के)

हे प्रभुत्राता लोक के, तुम दाता हो कल्याण के,
जय हो जय हो सन्मति दाता वीतराग विज्ञान के।
हे प्रभु त्राता.............

हिंसा का तांडव था भारी, बली प्रथा का जोर।
मुँह फैलाए बली प्रथा भी, छाई थी चारों ओर ॥
दास प्रथा में दास बने थे, नन्ने मुन्ने वाल।
नर पिशाच की क्रूर कृपा से, मानव था बेहाल ॥
हे प्रभु त्राता.............

पीड़ा से पीड़ित जन मन को, मिला तभी आधार।
गम को दूर हटाने हेतु, लिया वीर अवतार ॥
करूणा से पूरित हो प्रभु नें, भेष दिगम्बर धार।
ज्ञान ज्योति से आलोकित कर, किया बड़ा उपकार ॥
हे प्रभु त्राता.............

सत्य अहिंसा सत् संयम की, तुमने राह दिखाई।
सदाचरण सत् मरण की प्रभु जी, तुमने कला सिखाई ॥
महावीर को पाकर करता, है सारा जग नाज।
मोक्ष मार्ग का निस्पृह होकर, 'विशद' दिया था राज ॥
हे प्रभु त्राता.............

भक्त की भक्ति

(तर्ज- तेरे दर पे खड़ा भगवान)

तेरे दर पर खड़ा मुनिराज

कृपा मुझ पर तू कीजे

गूँज उठाऊँ महामंत्र की महामंत्र है प्यारा

तुम बिन नहीं है मेरा गुरुवर जग में कोई सहारा रे²

ये धरती करती नाज, आया मैं भक्ति के काज

कृपा मुझ पर तू कीजे............

रूप तुम्हारा पूर्ण दिगम्बर, तुमने संयम धारा

सत्य अहिंसा परम धर्म है, देते जग को नारा रे²

गुरु अनुपम एक जहाज, आया चरण तुम्हारे आज

कृपा मुझ पर तू कीजे............

तू ही कर्म का नाशन हारा, सिर चरणों में रहे हमारा

भव भटकन का तू ही किनारा, जग में है तू शुभम् सितारा रे²

आया 'विशद' भक्ति के काज, गुरू जी रखना मेरी लाज

कृपा मुझ पर तू कीजे............

हम जीने से तो ऊब चुके, और मरने से भी डरते हैं
सुख देख-देख कर औरों के, जीवन भर आहें भरते हैं
लोग जिन्दगी की अन्तिम घड़ी आने पर भी प्यारे भाई
सम्हल नहीं पाते हैं, हमेशा अपनी मन-मानी करते हैं।

बिहार बेला

(तर्ज - उड़ चला पंक्षी रे)

बढ़े जा रहे हैं मुनिवर, भक्तों को छोड़ के।
लायेगा फिर से उनको, कौन यहाँ मोड़ के ॥

(१) नहीं था भरोसा हमको, आप यहाँ आयेंगे।
सीख देकर हमको गुरुवर, आप चले जायेंगे ॥
क्यों बड़ चले हो गुरुवर, नेह हमसे तोड़ के।
लायेगा....... ॥

(२) चरणों में रहके हमने, ज्ञान तुमसे पाया है।
धर्म का सुधारस मेरे, उर में समाया है ॥
मंदिर में जायें कैसे, पुन: दौड़-दौड़ के।
लायेगा....... ॥

(३) सोचा नहीं था शायद, दिन भी ऐसा आयेगा।
चरणों की धूली लेना, मेरा छूट जायेगा ॥
सूची में रखना हमको, भक्तों की जोड़ के।
लायेगा....... ॥

(४) आशा लगाये बैठे, आप यहाँ आयेंगे।
आकर यहां से फिर, कभी नहीं जाऐंगे ॥
'विशद' रह पायेंगे न, गुरू तुम्हें छोड़ के।
लायेगा....... ॥

भजन

सम्मेद शिखर जाने वाले, एक काम कर देना।
पारस प्रभु के चरणों में, मेरा प्रणाम कह देना॥
रोते-रोते जीने वाले, देखे हमने जाते हैं।
तीर्थ वन्दना करने वाले, हँसते-हँसते आते हैं
पारस प्रभु के चरणों में, अपना शीष धर देना
पारस प्रभु..........

तीर्थराज शाश्वत है, और बड़ा पावन है
ग्रीष्म की तपन में भी, लगे वहाँ सावन है
जिन्दगी में आवे कोई, कष्ट सारे हर लेना
पारस प्रभु..........

संत साधना करके, मोक्ष फल पाते हैं
भक्त सभी भक्ति से, गुण गान गाते हैं
आये हैं चरण प्रभु, मेरी झोली भर देना
पारस प्रभु..........

भाग्य उदय आने पर, वन्दना को जाएंगे
चरण वन्दना करके, मुक्ति को पाएंगे
'विशद' एक हमको भी, दर्श का अवसर देना।
पारस प्रभु..........

आरती

आये हैं गाँव हमारे गुरु जी, आये हैं गाँव हमारे
मोक्ष मार्ग के अनुपम राही, जग के आप सहारे
गुरु जी...............

ज्ञानामृत का झरना झरता, श्री गुरुवर के द्वारे
गुरु जी...............

समय सार का सार हैं गुरुवर, पावन मूलाचारे
गुरु जी...............

अध्यातम की मूरत है जो, गुरुवर मेरे प्यारे
गुरु जी...............

तुम हो गुरुवर चन्दा सूरज, हम है गगन के तारे
गुरु जी...............

'विशद' भक्ति करने हम आये, करते जय जय कारे
गुरु जी...............

दो आशीष हमें हे ! गुरुवर आये चरण तुम्हारे
गुरु जी...............

जिस देव ने संसार को, सत् ज्ञान सिखाया,
जिस देव ने मिथ्यात्व का, अंधकार नशाया।
उस देव महादेव को, नमन हाथ जोड़कर,
जय बोलियेगा जोर से, एक बार बंधुवर।

दीपावली

महावीर को मोक्ष का उपहार मिल गया।
कि इस जहाँ को इक नया त्योहार मिल गया॥
चमन हो गई वह अमावश की सुबह।
जब वीर को आकार में निराकार मिल गया॥
त्याग तप शील संयम का है ये नजारा।
जलते हुए इक दीप का आधार मिलगया॥
मेरे दोस्त मनाओ खुशियाँ आज मिलकर।
गम भरी दुनियाँ को गमख्वार मिल गया॥
इन्सान अब इन्सानियत की जिन्दगी जी सकें।
इस जहाँ के लिए चैतन्य जिनहार मिल गया॥
आज जल उठा फिर ज्ञान का दीपक।
रोशनी का अब पुनः आसार मिल गया॥
हर एक जिगर में अब चैन की ही श्वांसें हैं।
इस जहाँ को महकता गुलजार मिल गया॥
जलना सिखाती दीप को जलन प्रकाश मय।
'विशद' जहाँ को ज्योतिर्मय, मनहार मिलगया॥

भजन

(तर्ज - पग घुंघुरू बांध मीरा)

ऐसे ठुमक ठुमक हम नाचें रे।[२]
वीतराग प्रभु की छवि मनहर
भर भर गगन कुलांचें रे।

ऐसे ठुमक.........

प्रभु चरणों में दीप जला के
हाथ घुमावत जावें रे।

ऐसे ठुमक.........

उप्पर नीचे घूम-घूम कर
क्षण क्षण कटि मटकावें रे।

ऐसे ठुमक.........

तुम हो प्रभु हम सेवक तुमरे
भव से मुक्ती पावें रे।

ऐसे ठुमक.........

तुम हो तारण तरण मुनीश्वर
'विशद' गुणों को गावें रे।

ऐसे ठुमक.........

भजन

सत् कर्म से इन्सान की तकदीर बनती है।
कागज पर कलम फेरने पर लकीर बनती है।।
जिस पत्थर को बेरहम होकर कुचला गया हर दम।
तराशने पर वही शिला महावीर बनती है।।

सदा समता की क्षमता में वास करो रे
सारे मन के विकारों का नास करो रे
सम्यक् दर्शन हमको पाना, सम्यक् ज्ञान का दीप जलाना
सम्यक् चारित हृदय वसाना, समता से कर्मों का हास करो रे...(१)
निज आतम से निज को जानो, निज को ही अपना पहिचानो
बात हमारी भाई मानो, विषयों से मन को उदास करो रे ...(२)
संत साधना करते मन से, पूर्ण विरक्ति पाते तन से
करें साधना बालापन से, मुक्ति को पाने की आस करो रे ...(३)
मुक्ति वधु से लगन लगाओ, परमातम को मन से ध्याओ
'विशद' ज्ञान सुख को पा जाओ, चेतन को बन्धु विकास करो रे ..(४)

गुरुवन्दना

गुरुवर क्यों बैठे चुपचाप, ज्ञान सिखाओ गुरुवर आप
गल्ती करो हमारी माफ, राह दिखाओ हमको साफ
हम सबका हो पूर्ण विकास, गुरुवर कर दो पूरी आस
हमको है पूरा विश्वास चरणों में करते अरदास।
गुरुवर क्यों..............
गुरुवर हो तुम ज्यों आकाश, हम हैं सभी चरण के दास
चरणों रहे हमार वास, गुरुवर रहो हमारे पास।
गुरुवर क्यों..............
जग का नहीं है कोई माप, भटक रहे हम करके पाप
महामंत्र का करना जाप, आँख मींच करके चुपचाप।
गुरुवर क्यों.............
तुम हो गुरु हमारे नाथ, तुम बिन हम हैं सभी अनाथ
मोक्ष मार्ग में देना साथ, पद में झुका रहे हम माथ।
गुरुवर क्यों..............
करते सभी वार्तालाप, जैन धर्म की छूटे छाप
मोक्ष महल में होवे वास, मन में लगी हमारे आस।
गुरुवर क्यों ....
मुस्करा करके दो आशीष, चरणों झुका रहे हम शीष
मोह राग का 'विशद' अलाप, मिट जाए मन का संताप।
गुरुवर क्यों..............